चतुर्थ अध्याय

"शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन"

चतुर्थ अध्याय

''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन''

- ❑ प्रास्ताविक

4.1 मूल्यांकन का अर्थ

4.1.1 राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.1.1 भ्रष्ट राजनीति

4.1.1.2 प्रजातंत्र की अव्यवस्था

4.1.1.3 नेता

4.1.1.4 भाषणबाजी तथा आश्वासन

4.1.1.5 अफसरशाही

4.1.1.6 कानून व्यवस्था तथा पुलिस

4.1.2 सामाजिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.2.1 स्वास्थ्य विभाग

4.1.2.2 आधुनिक जीवन में बिखरते परिवार

4.1.2.3 छात्र और अध्यापक के संबंध

4.1.2.4 शिक्षा जगत की त्रासदी

4.1.2.5 लोभ और शोषण की प्रवृत्ति

4.1.3 पारिवारिक समस्याओं, उलझनों, अभावों पर किए हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.3.1 पति-पत्नी के बीच की अनबन

4.1.3.2 आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न हास्य-व्यंग्य

4.1.3.3 प्रतिष्ठा के झूठे प्रदर्शन और आपसी ईर्ष्या भाव

4.1.3.4 अनोखेलाल पात्र की मूर्खताओं द्वारा प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य

- ❑ निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

" शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन"

❑ प्रास्ताविक -

व्यंग्य समाज की विसंगति पर असंतोष व्यक्त करने का एक उत्तम साधन है। व्यंग्य सुधार का कार्य नहीं करता, लेकिन सुधार के लिए प्रवृत्त अवश्य करता है। अत: कह सकते हैं कि व्यंग्य प्रत्यक्ष रूप में नहीं लेकिन अप्रत्यक्ष रूप में सुधार का कार्य करता है। व्यंग्यकार का उद्देश्य समाज में फैली अनीति, विसंगतियों का पर्दाफाश करना, पाखंडियों, ढोंग रचनेवालों और भ्रष्टाचारियों की पोल खोलना होता है। 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह की एकांकियों का व्यंग्य भी इन्हीं बातों के प्रति असंतोष व्यक्त करता है। इनमें से कुछ एकांकी व्यंग्यप्रधान हास्य एकांकी हैं तो कुछ हास्यप्रधान व्यंग्य एकांकी हैं लेकिन वह अपने उद्देश्य को पाठक के सामने रख देते हैं। विवेच्य एकांकियों में युक्त व्यंग्य विभिन्न बातों पर प्रकाश डालते हैं। शीर्षक एकांकी 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' डॉक्टरी पेशे में फैलते पूँजीवादी दृष्टिकोण को उद्घाटित करता है। अन्य एकांकी भ्रष्टाचारी नेताओं, व्यापारियों आदि की पोल खोलते हैं, तो कुछ एकांकी शिक्षा क्षेत्र की विसंगति को उजागर करते हैं। इन एकांकियों में छात्र-अध्यापक के संबंध, शिक्षा व्यवस्था की त्रासदी आदि बातों पर प्रकाश डाला है। साथ ही कुछ एकांकी पारिवारिक समस्याओं, अभावों आदि बातों पर भी हास्य-व्यंग्य करते हैं। व्यंग्य एक ऐसा शस्त्र है, जो अपने वार से व्यक्ति को आहत तो कर देता है, लेकिन यह चोट ऊपरी न होकर आंतरिक होती है जिससे व्यक्ति के वर्तन में सुधार आने की संभावनाएँ बनी रहती हैं।

हास्य व्यक्ति के आनंद का प्रतीक है। वह व्यक्ति की प्रसन्नता के साथ जुड़ा रहता है, लेकिन व्यंग्य के साथ प्रयुक्त होनेवाला हास्य अलग प्रकार का होता है। वह व्यंग्य से उत्पन्न होनेवाले आघात को कम करने का कार्य करता है। इस से व्यंग्यकार अपने उद्देश्य में सफल भी हो पाता है और उसके दुष्परिणाम से भी बच जाता है। अत: व्यंग्य के साथ प्रयुक्त

हास्य मनोरंजन तो करता ही है, साथ ही व्यंग्य से होनेवाले आघात को कम करने का कार्य भी करता है। अत: व्यंग्य और हास्य का अपना-अपना महत्त्व है। इन दोनों के एकत्रित प्रयोग से हास्य-व्यंग्य की निर्मिति होती है। हास्य-व्यंग्य पाठकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उसे समाज में व्याप्त विसंगतियों, मूर्खताओं, विवशताओं के प्रति जागृत करने का कार्य भी करता है।

4.1 मूल्यांकन का अर्थ -

विवेच्य एकांकी संग्रह के एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन शब्द का अर्थ जान लेना जरुरी है। मूल्यांकन का सामान्यत: अर्थ है - 'मूल्य का अंकन करना।' 'नालंदा विशाल शब्द सागर' के अनुसार 'मूल्यांकन' का अर्थ है - ''मूल्यांकन(संज्ञा पु.) (सं.) किसी का मूल्य या महत्त्व आँकना अथवा समझना। एग्रिसिएशन।''[1]

'मानक हिंदी कोश' के अनुसार 'मूल्यांकन' का अर्थ इस प्रकार है - ''मूल्यांकन -पु.(सं.मूल्य-अंकन, ष.त.) 1. किसी बात या वस्तु का मूल्य निर्धारित या निश्चित करने की क्रिया या भाव। (वैल्यूएशन) 2. किसी वस्तु की उपयोगिता, गुण, महत्त्व आदि का होनेवाला अंकन।''[2]

उपर्युक्त शब्द कोश में दिए हुए अर्थ देखने पर 'मूल्यांकन' का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। मूल्यांकन अर्थात् किसी वस्तू का महत्त्व आँकना या उसके महत्त्व के विषय में जान लेना, उसे स्पष्ट करना है। इस अध्याय में हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन करना है, अर्थात् - हास्य-व्यंग्य के मूल्य को या महत्त्व को स्पष्ट करना है। इसलिए हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन करने के लिए विवेच्य एकांकियों में हास्य-व्यंग्य से प्रभावित घटना, विषय आदि को आधार बनाया है। प्रस्तुत एकांकी संग्रह में पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है, जो दर्शकों को एकांकी देखते समय बाँधे रखता है। यह एकांकी पढ़ते समय इतने श्रेष्ठ नहीं जान पड़ते हैं, लेकिन एक सुयोग्य निर्देशक के सफल निर्देशन में इनका मंच पर किया गया प्रयोग दर्शकों पर प्रभाव छोड़ने में सफल सिद्ध हो सकता है। इसके शीर्षक एकांकी 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' का छ.शिवाजी कॉलेज, सातारा में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में किया गया मंचन इस बात का प्रमाण है।

---

1. सं. श्री. नवल जी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 1118
2. सं. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश - चौथा खंड, पृष्ठ - 405

तात्पर्य यह कि लेखक के एकांकियों का मंचन आज भी प्रासंगिक लगता है। शंकर पुणतांबेकर ने इस एकांकी संग्रह के माध्यम से समाज में फैल रही अनीति, स्वार्थ-भावना, मानवीय मूल्यों का ऱ्हास, राजनीति में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, सत्तालोभी नेताओं की केवल प्राप्त करने की वृत्ति, झूठे आश्वासन, अस्त-व्यस्त समाज व्यवस्था, भ्रष्ट शासन व्यवस्था आदि गंभीर विषयों को हास्य के मीठे वेष्टन में लपेट कर 'शर्करावेष्टित कटु भेषज' का उत्तम उदाहरण सामने रखा है। अत: उनके विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन यहाँ निम्नांकित है -

4.1.1 राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन :

शंकर पुणतांबेकर के इस एकांकी संग्रह में 'इन्टरव्यू: एक चुनाव के उम्मीदवार से', 'इन्टरव्यू की तैयारी', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', 'चूहें' आदि एकांकी राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में मची धाँधली का उद्घाटन करते हैं। इन एकांकियों में प्रजातंत्र, भ्रष्ट राजनीति, मुखौटेबाजी, भाषणबाजी, चुनाव, पुलिस विभाग, अफसरशाही आदि बातों पर हास्य-व्यंग्य किया गया है। नेताओं तथा समाज में प्रतिष्ठित समझे जानेवाले लोगों द्वारा ही समाज को लूटा जा रहा है। रक्षक ही भक्षक बनते चले जा रहे हैं। पुणतांबेकर इन समस्त भ्रष्टाचारियों का पर्दाफाश करते हैं।

4.1.1.1 भ्रष्ट राजनीति :-

स्वातंत्र्योत्तर काल में भी राजकीय नेताओं द्वारा नैतिक मूल्यों को कूचला गया है। सत्ता को प्राप्त करने हेतू और प्राप्त हुई सत्ता पर कब्जा जमाए रखने की वृत्ति के कारण भ्रष्ट राजनीति का उदय हुआ। समाज में नेताओं ने अपने दायित्व को तिलांजली देकर भ्रष्टाचार को अपना लिया है और राजनीति के दाँव-पेचों से अपने हित साधने के चक्कर में नीतिमूल्यों को त्याग दिया है। इस परिवर्तित परिस्थिति का ब्यौरा 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' इस एकांकी के माध्यम से मिलता है। प्रस्तुत एकांकी में चुनाव के लिए खड़े रहे उम्मीदवार (मनोहर लाल) की योग्यता जाँचने के लिए एक डॉक्टर, सामान्य जनता के प्रतिनिधि के रूप में उसकी इन्टरव्यू लेता है। इस इन्टरव्यू से स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार से यह

चुनावी उम्मीदवार अपने कर्तव्यों के प्रति अनभिज्ञ है और केवल आश्वासनों के बलबूते पर अपने शासन की इमारत खड़ी करना चाह रहा है। नेताओं के इस वृत्ति को केंद्र बनाकर डॉ.ए.एन. चंद्रशेखर रेड्डी ने भी लिखा हैं - ''आज की राजनीति में जनता का कोई महत्त्व नहीं है। नेता या नायक बनने के लिए ईमानदारी, सच्चाई, देश-प्रेम, चरित्र आदि की आवश्यकता नहीं है। केवल जनता को मूर्ख बनाने की चालाकी और धोकेबाजी की योग्यता पाकर कोई भी आदमी बहुत आसानी से नेता बन सकता है।''[1] इस प्रकार से नेताओं की खोखली चुनाव-व्यवस्था पर से लोगों का विश्वास उठता चला जा रहा है। बेईमान और रिश्वतखोर नेताओं का शासन ही यहाँ जोरों-शोरों से चल रहा है। वह अपने पैसों के बलबूते पर इच्छित पद हासिल कर लेता है। उम्मीदवार के संवाद उसके वैचारिक स्तर को स्पष्ट कर देते हैं - ''स्कूली शिक्षा से क्या होता है डॉक्टरसाहब। राजनीतिक क्षेत्र में मैंने इतना काम किया है और इतना सीखा और अनुभव प्राप्त किया है कि उसके मुकाबले स्कूल-कॉलेज की शिक्षा कुछ भी नहीं है।''[2] इस तरह उम्मीदवार के संवादों को पढ़कर हम कह सकते हैं कि शिक्षा को राजनीति में गौण स्थान है और राजनीतिक दाँव-पेंच मालूम होना ही यहाँ महत्त्वपूर्ण बात है।

'चूहें' नामक एकांकी में भी नेताओं की इसी भ्रष्टाचारी वृत्ति को उद्घाटित किया है। समाज के समस्त भ्रष्टाचारी वर्ग को चूहों की तथा पुलिस आदि को एक ऐसी बिल्ली की उपमा दी है, जो बिल्ली होकर भी किसी बड़े चूहें को देखकर उसके सामने जाने से डरती है। इस बिल्ली के शिकार केवल छोटे चूहें होते हैं। इस प्रकार से समाज में घटित घटनाओं और चूहों ने घर में मचाई उधम को एक साथ जोड़ते हुए तथा उसकी एक-दूसरे से तुलना करते हुए हास्य-व्यंग्य के माध्यम से नेताओं की चूहा-वृत्ति को सामने ला कर रख दिया है। इस तरह से व्यंग्यकार पुणतांबेकर द्वारा किया गया व्यंग्य भ्रष्टाचार की तथा भ्रष्टाचारियों की पोल खोल देता है। इसमें हास्य का प्रयोग भी जगह-जगह पर दिखाई देता है। राजनीतिक भ्रष्टाचार की पोल खोलने में प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य सफल रहा है।

4.1.1.2 प्रजातंत्र की अव्यवस्था :-

प्रजातंत्र अर्थात् वह शासन-पद्धति जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधी तथा प्रधान शासक को चुनती है परंतु आज समाज में प्रजातंत्र का अर्थ बदल रहा है।

---

1. डॉ. ए.एन.चंद्रशेखर रेड्डी - हिंदी हास्य-व्यंग्य, पृष्ठ - 28-29
2. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - इंटरव्यू एक चुनाव के उम्मीदवार से, पृष्ठ - 63

प्रजा अपना शासक चुनती है लेकिन उस चुनाव के पीछे कोई दूर दृष्टिकोण नहीं है। लोग क्षणिक दिखावे और आश्वासनों के झूठे जाल में फँसकर अपना कीमती वोट किसी ढोंगी को ही दे देते हैं और अपने कई साल उसके शासन में झोंक देते हैं। स्वतंत्रता के उपरांत भी देश इस शासन व्यवस्था से मुक्त नहीं हो पाया है। 'Divide & Rule'का तत्त्व बदल कर अब 'Rule & Corruption' में परिवर्तित हो गया है। अँग्रेजी शासन-व्यवस्था लोगों को आपस में भड़काकर उन पर नियम लगाती थी, अपने कायदे उन पर लाद देती थी। आज की शासन-व्यवस्था ऐसे कायदे बनाती है कि अमीर और अमीर बनता है और गरीब और गरीब। इस प्रजातंत्र में नेता अपना असली रंग चुनाव जीतने पर दिखाता है। प्रजा सिर्फ हक्का-बक्का देखती रहती है। इस स्थिति का भी उद्घाटन 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' तथा 'चूहें' एकांकी में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से किया गया है। अत: 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' एकांकी न केवल नेताओं पर व्यंग्य करता है, तो अप्रत्यक्ष रूप से उन समस्त लोगों पर भी व्यंग्य करता है जो आँखें मूँदकर बिना सोचे-समझे अपना कीमती वोट किसी को भी दे देते हैं। अँग्रेजी शासन-व्यवस्था के उपरांत देश में सामंतवाद तथा पूँजीवाद ने घर बना लिया है। 'चूहें' एकांकी में पुणतांबेकर इन पूँजीवादियों पर व्यंग्य करते हैं। चुनाव, मतदान आदि सिर्फ दिखावे की बातें बन गई हैं। प्रजातंत्र शब्द से प्रजा गायब हो कर केवल तंत्र ही बाकी रह गया है। इस व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' एकांकी में डॉक्टर के विचार द्रष्टव्य है - ''मेरा विज्ञापन देखकर आप लोगों को कुछ अजीब लगा होगा। अब तक कभी ऐसा नहीं हुआ है कि किसी वोटर ने उम्मीदवारों को अपने यहाँ विज्ञापन देकर बुलाया हो। बात यह है कि मैं अपने व्यवसाय के कारण बहुत व्यस्त रहता हूँ। मेरा परिवार काफी फैला हुआ है। सभी मुझसे पूछते हैं, डॉक्टर आप किसे वोट देंगे, हम आपके साथ हैं। मैं उनसे कहता हूँ, प्रजातंत्र में हर व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार वोट देने के लिए स्वतंत्र है अपने विवेक से जिसे भी वोट देना चाहो, दो। फिर भी वे मेरी राय पर ही चलना चाहते हैं। प्रजातंत्र में जहाँ एक-एक वोट का महत्त्व है, यहाँ मेरे परिवार और परिचितों के सम्मिलित वोट सब से अच्छे उम्मीदवार को जाए, इसी दृष्टि से मैंने विज्ञापन दे दिया कि आज इस समय स्वयं उम्मीदवार या उसके प्रतिनिधि आकर मुझसे मिलें ताकि सभी से सवाल जवाब कर लेने के बाद कोई राय कायम की जा सके।''[1]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - इंटरव्यू एक चुनाव के उम्मीदवार से, पृष्ठ - 60-61

डॉक्टर के माध्यम से प्रस्तुत व्यंग्यकार की यह कल्पना सराहनीय है। इसमें अपने वोट के प्रति लापरवाह जनता पर छिपा व्यंग्य किया है। इससे पुणतांबेकर यह संदेश देने में सफल रहे हैं कि जब भी वोट दो पूरी समझदारी के साथ दो। अत: स्पष्ट है कि पुणतांबेकर ने अपने व्यंग्य लेखन में प्रजातंत्र का भी विचार किया है।

4.1.1.3 **नेता :-**

जहाँ 'नेता' शब्द से जनता का नेतृत्व करनेवाला व्यक्तित्व सामने आ जाता था वहाँ अब केवल सत्ता-लोभी, भ्रष्टाचारी, स्वार्थी आदि विशेषणों के अलावा और कुछ बाकी नहीं रहा है। जहाँ-जहाँ कुर्सी का सवाल खड़ा हो जाता है, वहाँ हजारों नेता उभर कर सामने आ जाते हैं। जनता के नेतृत्व की अपेक्षा कुर्सी के उपभोग की इच्छा ही उनमें अधिक मात्रा में पनप रही है। अत: नेता के इसी सत्ता लोभी वृत्ति को लक्ष्य बनाकर शंकर पुणतांबेकर ने प्रस्तुत एकांकियों में अपना व्यंग्य लेखन किया है। नेता की हर वृत्ति को इन्होंने बारीकी से पाठकों के सामने रख दिया है। 'चूहें' एकांकी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। नेता किस तरह से अपना और अपने आप्तजनों का कल्याण करने में लगा रहता है, इस बात को भी यहाँ स्पष्ट किया है -

''मुरली - हमारे नेता लोग हर जगह अपनी टांग अड़ाते हैं। जिस उम्मीदवार को चुना गया, उसके लिस हमारे एम.एल.ए. हरदयाल जी ने पहले से ही कह रखा था।

अनोखेलाल - क्या तुम्हारी तरह उसका भी बी.काम. में फर्स्ट क्लास है ?

मुरली - नहीं थर्ड क्लास है। वैसे उसके लिए नौकरी की इतनी जरुरत भी नहीं है, जितनी मेरे लिए है ?''[1]

इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि सत्ता प्राप्त करने के बाद भी किस प्रकार से नेता अपने अधिकार का गलत फायदा उठाते हैं, सामान्य जनता का शोषण करते हैं। लोगों में बढ़ रही सत्ता की अभिलाषा और स्वार्थ भावना तथा प्रजातंत्र की बदलती परिभाषा का ही प्रतिफल यह वर्तमान नेता कहे जा सकते हैं। शंकर पुणतांबेकर ने अपने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से इस स्थिति को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। चूहे को नेता के प्रतीक रूप में रखने से

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - चूहें, पृष्ठ - 176

कहीं-कहीं हास्य निर्मिति हो गई है। प्रस्तुत एकांकी में प्रयुक्त व्यंग्य प्रभावी तथा हास्य मनोरंजनात्मक है। नेताओं के भ्रष्ट व्यवहार को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से पाठकों के सामने रखने में पुणतांबेकर सफल रहे हैं।

4.1.1.4 भाषणबाजी तथा आश्वासन :-

समाज में आए दिन भाषणबाजी और नारेबाजी का सिलसिला बढ़ता चला जा रहा है। नेताओं के झूठे आश्वासनों से सामान्य आदमी उलझता जा रहा है। विज्ञापन के इस युग में नेता भी अपने भाषणों तथा नारों से जनता के आगे जाल फेंक देता है और भोली-भाली जनता सब जानते हुए भी इन नेताओं के हाथों की कठपुतली बन जाती है। चुने जाने से पहले मीठे बोल बोलनेवाले नेता बाद में उस आदमी को पहचानते भी नहीं। सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं। उनके भाषणों में तथा घोषणा पत्रों में लिखी हुई सब बातें वहीं धरीं की धरीं रह जाती है। शंकर पुणतांबेकर इस स्थिति में बदलाव चाहते हैं और अपने एकांकी 'चूहें' तथा 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' इन एकांकियों में नेताओं के विभिन्न भ्रष्ट व्यवहारों पर व्यंग्य करते हैं। चुनाव जीतने के लिए नेता झूठे आश्वासनों और भाषणबाजी का सहारा लेते हैं। उनकी इस आदत पर भी पुणतांबेकर डॉक्टर द्वारा व्यंग्य करते हैं - "देखिए, नेता लोग अपने भाषणों में जिस प्रकार की बातें प्राय: हाँक देते हैं एक ही साँचे की, कुछ वैसी ही बातें आप कर रहे हैं। आप शायद नहीं जानते कि यहाँ के किसानों के सामने समस्या सिंचाई की नहीं, बाढ़ की है। अच्छे बैल, बीज और खाद की नहीं है बल्कि अच्छी मण्डियों और उन तक पहुँचाने के मार्गो की है। यहाँ का हर किसान सोचता है कि खून पसीना बहाकर पैदा की हुई अपनी पैदावार के उचित दाम कैसे मिलें।"[1]

डॉक्टर के उपर्युक्त संवादों से यह साफ स्पष्ट होता है कि यह उम्मीदवार जनता की असली समस्या से बिल्कुल अनभिज्ञ है और वह जिन बातों को उपलब्ध कराने की बात कर रहा है उनकी कोई खास जरूरत ही नहीं है। इस प्रकार से यह नेता अधूरे ज्ञान के आधार पर केवल पार्टी के घोषणापत्र में लिखी हुई बातें रटकर ही अपनी योजना के रूप में बता देता है। लेकिन वास्तव में वह जिस क्षेत्र से चुनाव के लिए खड़ा रहा है वहाँ के लोगों की समस्या सिंचाई के साधन, बीज, बैल आदि की न होकर अच्छे बाजार की और उन बाजार या मण्डियों तक

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - इन्टरव्यू एक चुनाव के उम्मीदवार से, पृष्ठ - 65

पहुँचने के लिए पक्के सड़कों की हैं। यह स्थिति हर जग देखी जा सकती है। जो कोई भी नेता चुनाव के लिए जिस क्षेत्र से खड़ा रहता है, उसे उस क्षेत्र के बारे में, वहाँ के समस्याओं के बारे में, आवश्यकताओं के बारे में कोई भी जानकारी नहीं होती है। अत: केवल अपने झूठे भाषणों, नारेबाजी और घोषणापत्रों में लिखे झूठे आश्वासनों के कारण ही वह चुनाव में जीत जाते हैं। पुणतांबेकर इन झूठे भाषणों, कथनी और करनी के इस भेद पर व्यंग्य करते हैं।

4.1.1.5 **अफसरशाही :-**

'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह में संकलित एकांकी 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' अफसरों की पक्षपाती वृत्ति और अफसरशाही पर व्यंग्य करता है। प्रस्तुत एकांकी का पात्र अनोखेलाल मध्यवर्गीय लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। मन में इच्छा रखता है कि वह भी अपने अफसर को प्राप्त सभी सुविधाओं का लाभ उठा सके। एक बार ऐसा अवसर मिलने पर वह अपनी यह इच्छा पूरी कर लेना चाहता है। अनोखे के हाथ में ऑफिस का चार्ज कुछ समय के लिए चला जाता है और उस पर अफसरशाही छा जाती है। ऑफिस का चार्ज मिलते ही अनोखे में लाक्षणिक बदलाव आ जाता है। यह बात निम्न संवादों में भी स्पष्ट हो गई है -

"सुरेशचंद्र - लेकिन अनोखेलाल ...

अनोखे - ढंग से बात करो। तुम अनोखेलाल से नहीं अपने बॉस से बात कर रहे हो। अपने साहब से किस अदब से बात की जाती है, इतना तक शऊर नहीं है तुममें।

सुरेशचंद्र - माफ कीजिए, मुझ से कसूर हो गया। मेरे बेटे की तबियत ...

अनोखे - उसे डॉक्टर को दिखाओ तबियत खराब है तो। आप घर बैठकर क्या कर लेंगे उसकी तबियत के लिए ? जाओ, अभी काफी समय है और समय पर ऑफिस में हाजिर रहो।"[1]

इस तरह से अनोखे सब पर रौब जमाने लगता है। पुणतांबेकर अनोखे के इस परिवर्तित वर्तन से समस्त अफसरों की आदतों पर व्यंग्य प्रहार करते हैं। किस प्रकार से अफसर अपने से छोटे लोगों पर रौब जमाते हैं तथा उनका शोषण करते हैं - इस बात को यहाँ स्पष्ट करने

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज, पृष्ठ - 51-52

की कोशिश की गई है। आम तौर पर सभी कार्यालयों, प्रशासनिक क्षेत्रों में अफसर की इन आदतों से अन्य कर्मचारी पीड़ित दिखाई देते हैं। अत: इस एकांकी के द्वारा पुणतांबेकर इस अफसरशाही पर व्यंग्य करते हैं। कहीं पर वक्रोक्ति के कारण हास्य की भी निर्मिति हुई हैं। हास्य-व्यंग्य के माध्यम से इस एकांकी में पुणतांबेकर ने मध्यमवर्गीय समाज में उच्चवर्गीय जैसा जीवन जीने की लालसा को और अधिकार हाथ में आने से व्यक्ति में आनेवाले बदलाव को अंकित किया है।

4.1.1.6 कानून व्यवस्था तथा पुलिस :-

पुणतांबेकर कानून व्यवस्था में बढ़ रही अस्तव्यस्तता पर भी अपने व्यंग्य-बाण चलाने से चूके नहीं हैं। 'चूहें' एकांकी में पुणतांबेकर पुलिस को बिल्ली की उपमा देते हैं। नेताओं, भ्रष्टाचारियों को चूहे की उपमा दी है और चूहों ने मचाई हुई उधम की तुलना इन भ्रष्टाचारियों की करतूतों से की है। उनके सभी काले धंदों का पर्दाफाश किया है। पोपटलाल अनोखे को चूहों को भगाने के नए-नए तरिके बताते हैं -

''पोपटलाल - दूसरा उपाय है बिल्ली। बिल्ली पाल लीजिए एक।

अनोखेलाल - अरे साहब, बिल्लियों का भी आजकल कोई भरोसा नहीं। कहते हैं किसी बड़े चूहे के सामने उसकी भी कुछ नहीं चलती।

पोपटलाल - तो बस एक ही उपाय बच जाता है और वह है जहर मिलाकर आटे की गोलियाँ रख दीजिए रात को इधर-उधर। खा लेंगे और मर जायेंगे अपने आप।

अनोखेलाल - हमारी श्रीमती जी को यह पसंद नहीं।

पोपटलाल - हाँ। सरकार का हुकुम तो मानना ही चाहिए।''[1]

इन संवादों के आगे इसी समस्या की जैसी और दूसरी सामाजिक समस्या को जोड़ा है। बिल्ली और चूहों की जगह पुलिस और भ्रष्टाचारियों के विषय में चर्चा की है, जिससे पहले प्रसंग से दूसरे प्रसंग की साम्यता स्पष्ट होती है और चूहे-बिल्ली की प्रवृत्ति इन भ्रष्टाचारियों और पुलिस के साथ जुड़ जाती है।

''अनोखेलाल-चावल का ट्रक। तो क्या चोरी का धंदा भी करते हैं ? इतना बड़ा सेठ और चोरी का धंधा।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - चूहें, पृष्ठ - 172

पोपटलाल - कुछ न पूछो, जो जितना बड़ा है उतना ही चोर है।

अनोखेलाल - इन चोरों को तो कड़ा दंड दिया जाना चाहिए।

पोपटलाल - लेकिन सवाल है कि कौन दे। पुलिस ने उनका मामला दर्ज ही नहीं किया। पुलिस का भी आजकल कोई भरोसा नहीं रहा। बड़ों के सामने वह झुक जाती है।

अनोखेलाल - लेकिन मैंने सुना है कि इन्स्पेक्टर रामसिंह बड़ा सख्त है।

पोपटलाल - हाँ है। लेकिन किसी का डंडा तब चले न जब तक तुम खुले में हो। तुम यदि बिल में - यानी किसी की ओट में छिप जाओ तो किसी का क्या बस चले।

अनोखेलाल - किसी की ओट, मतलब ?

पोपटलाल - रामजीलाल सेठ हमारे एम.एल.ए. हरदयालजी के रिश्तेदारों में से है।''[1]

उपर्युक्त दोनों संवादों से स्पष्ट होता है कि पुणतांबेकर ने किस प्रकार से पुलिस विभाग की कमजोरियों पर बिल्ली की प्रवृत्ति का प्रतीकात्मक व्यंग्य किया है। बिल्ली छोटे-छोटे चूहों की झट से शिकार करती हैं, लेकिन किसी बड़े चूहें को देखकर वह दूम दबाकर बैठ जाती है। उसी प्रकार पुलिस भी छोटे-छोटे अपराधियों को तत्काल दंड देने में सक्षम होती है लेकिन किसी बड़े अपराधी को खासकर तब, जब अपराधी किसी नेता आदि से संबंधित हो तो वह उसे दंडित करने में अकार्यक्षम, असमर्थ दिखाई देती है। उपर्युक्त पहले संवाद में 'बिल्लियों का भी आजकल-भरोसा नहीं। कहते हैं किसी बड़े चूहे के सामने उसकी भी कुछ नहीं चलती।' दूसरे संवाद में 'पुलिस का भी आजकल कोई भरोसा नहीं रहा। बड़ो के सामने वह झुक जाती है।' यह दोनों वक्तव्य पुलिस पर बिल्ली तथा नेताओं पर चूहे के किए गए प्रतीकात्मक व्यंग्य को स्पष्ट करते हैं। इस एकांकी में हास्य-व्यंग्य का सफल प्रयोग हुआ है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि पुणतांबेकर के एकांकियों का हास्य-व्यंग्य राजनीतिक और प्रशासनिक उथल-पुथल को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में सफल रहा है। यह हास्य-व्यंग्य पाठकों को वर्तमान युग की गंदी राजनीति से परिचित कराता है।

4.1.2 सामाजिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन -

इन एकांकियों में सामाजिक क्षेत्र से जुड़े समस्याओं, विसंगतियों को विषय बनाया गया है। समाज से संबंधित शिक्षा क्षेत्र, आधुनिक युग का प्रभाव, आधुनिक सभ्यता

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - चूहें, पृष्ठ - 172-173

आदि में बढ़ती असंगति पर व्यंग्यात्मक और हास्यात्मक लेखन किया गया है। व्यंग्य शैली में लिखे गए यह एकांकी सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार करते हैं। विभिन्न विषयों को यहाँ पर उद्‌घाटित किया गया है। शिक्षा क्षेत्र में बढ़ रही अव्यवस्था, आधुनिकता के शिकंजे में जकड़ता जा रहा वर्तमान समाज और छात्रों की बदलती मानसिकता आदि बातों को व्यंग्य का निशाना बनाया गया है। इसमें निहित हास्य पाठकों का मनोरंजन करता है, तो व्यंग्य सोचने की दृष्टि निर्माण करता है। एकांकी संग्रह के सामाजिक क्षेत्र से संबंधित सभी एकांकियों का हास्य-व्यंग्य इन बातों पर प्रकाश डालता है। समाज के स्वास्थ से जुड़े स्वास्थ विभाग की धाँधली को हास्य-व्यंग्य द्‌वारा प्रस्तुत किया गया है।

4.1.2.1 स्वास्थ्य विभाग :-

आज के युग में व्यक्ति को स्वास्थ्य संबंधी बहुत-सी तकलिफों के कारण डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। स्वास्थ्य विभाग में भी डॉक्टर आदि द्‌वारा भ्रष्टाचार और पूँजीवादी दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं। डॉक्टरों में पैसा कमाने की होड़-सी लगी है। जिसके कारण वह मरिजों को गोल-मोल बातों में उलझाकर उन्हें बार-बार अस्पताल आने को मजबूर करते हैं। डॉक्टरों की यह वृत्ति सामान्य तौर से हर कहीं दिखाई देती है। पुणतांबेकर ने डॉक्टरों की गैरजिम्मेदाराना हरकत पर तीव्र व्यंग्य व्यक्त किया है। किशोर नामक पात्र के संवाद डॉक्टरों की इस पूँजीवादी दृष्टि को सामने लाकर रख देते हैं। चार-चार डॉक्टरों के घेरे में फँसा किशोर उनके विभिन्न सलाहों, औषधियों और अलग-अलग टेस्ट करवाकर उब जाता है -

"कैलाश - (प्रवेश करके) - अरे भाई किशोर कैसे हो ? रात को नींद तो ठीक आई ?

किशोर - और इसके देख लेने के बाद आयेंगे पिताजी। फिर आयेंगी भाभी जी और फिर आयेगी शांति। सब मुझसे यहीं सवाल करेंगे। नहीं नहीं, अब यह मुझसे नहीं सहा जाता। एक हफ्ता हो गया इसी तरह।.... मुझे अब छुट्‌टी दो कैलाश। मेरी नब्ज, जबान, छाती और पीठ आप में से हर एक दस-दस बीस-बीस बार देख चुका है। इंजक्शनों से मेरे हाथों की छलनी बन गई है। आप लोगों की गोलियों से तो बन्दूक की गोलियाँ खाना बेहतर है। बस बस, कैलाश तुम्हारा स्टेटोस्कोप दूर ही रखो। बिस्तर पर लेटे रहना भी अब मेरे लिए मुश्किल हो गया है। (उठकर दरवाजे की ओर भागता है।)"[1]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ, पृष्ठ - 27

एक मरीज की मानसिकता को भी पुणतांबेकर ने यहाँ स्पष्ट किया है। प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक भी व्यंग्यात्मक है, जिससे डॉक्टरों के प्रति असंतोष व्यक्त होता है। डॉक्टरों की पूँजीवादी दृष्टि और मरीज की विवशता का सफल अंकन प्रस्तुत एकांकी में किया गया है। मरीज डॉक्टरों की सलाहों, दवाईयों, टेस्ट आदि से इतना परेशान हो जाता है कि वह आख़िर कहता है 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'। अत: शंकर पुणतांबेकर ने डॉक्टरों की इस पूँजीवादी दृष्टि पर व्यंग्य तो किया ही है साथ ही किशोर के संवादों द्वारा हास्य निर्मिति भी की है। डॉक्टरी पेशे में मची हेराफेरी का पर्दाफाश करने के साथ-साथ एक मरीज की मानसिकता को सफलता से अंकित किया है। हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से यह एकांकी मनोरंजनात्मक बन गया है।

4.1.2.2 आधुनिक जीवन में बिखरते परिवार :-

'तितली' एकांकी में आधुनिकता के परिणाम स्वरूप हुए मानवीय संबंधों के विघटन को दिखाया गया है। आधुनिक युग में स्थापित नए नीति-मूल्यों के कारण परिवार में, समाज में व्यक्ति एक-दूसरे से दूर चला जा रहा है। प्रस्तुत एकांकी में पुणतांबेकर ने इसी बात को व्यंग्य का विषय बनाकर उससे उत्पन्न समस्या को पाठकों के सामने रखा है। 'तितली' एकांकी प्रतीकात्मक व्यंग्य एकांकी है। इस एकांकी का प्रमुख पात्र रतना आधुनिकता से इतनी प्रभावित दिखाई देती है कि परंपरागत चले आए मूल्यों को तोड़ देना चाहती है। वह घरेलु बातों में दिलचस्पी नहीं लेती, अत: महिला मंडलियों, सभाओं आदि में ही अपना सारा वक्त गुजार देती है। अपने पति किशोर की किसी भी बात से वह सहमत नहीं होती है और उसकी हर बात का दूसरा ही अर्थ निकालती है -

"किशोर - रतना, मैं कोई बात पूछता हूँ और तुम एक लंबा भाषण देने लगती हो। भाषण ही देना हो तो महिलासमाज में जाकर दिया करो, मेरे सामने नहीं। ओ हो, आज तो तुमने बड़ा श्रृंगार किया है। कितनी सुंदर लगती हो।

रतना - पति के ऐसे उद्‌गारों से किसी सामान्य स्त्री के समान खुश होनेवाली स्त्री मैं नहीं, किशोर। जिस दिन आप कहेंगे तुम कितना अच्छा भाषण देती हो।... तुम कितने सुंदर लेख लिखती हो। उस दिन मैं खुश होऊँगी। मैं कला की उपासक हूँ, किशोर। कला मेरे जीवन का लक्ष्य है।"[1]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - तितली, पृष्ठ - 33

प्रस्तुत एकांकी में रतना नामक पात्र के माध्यम से पुणतांबेकर ने वर्तमान युग की आधुनिक नारी पर व्यंग्य किया है। यह नारी अपने अस्तित्व को सिद्ध करने की कोशिश में अपने परिवार से दूर जा रही है। पुणतांबेकर द्वारा किए गए व्यंग्य से स्पष्ट होता है कि जीवन में मानवीय संबंध महत्त्वपूर्ण है। अस्मिता को सँभालते रहने से पति-पत्नी के रिश्ते मे दरार आ जाती है और पारिवारिक संबंध बिखरने लगते हैं। वर्तमान युग में यह 'अस्मिता' का प्रश्न बढ़ता जा रहा है और साथ ही पति-पत्नी के रिश्तों मे दरार भी बढ़ती जा रही है। एकांकी के अंत में रतना को हुई गलती के एहसास से पुणतांबेकर यह बताने में सफल रहे हैं कि आपसी प्रेम, आत्मीयता बनाई रखनी है तो इस झूठे अहंकार और अस्तित्व के प्रश्न को खड़ा नहीं करना चाहिए।

आधुनिकता की चमक-धमक और विचारों की आधुनिकता रतना को परिवार से दूर ले जाती है। यह आधुनिकता किशोर और रतना के संबंध में दरार आने का कारण बनती है। इस परिस्थिति का पुणतांबेकर अपने व्यंग्य लेखन के जरिए पर्दाफाश करते हैं। आधुनिकता की चादर ओढ़कर अपनी अस्मिता को सँभालनेवालों और सच्चाई से मूँह मोड़नेवालों पर पुणतांबेकर व्यंग्य करते हैं। आधुनिकता की चादर खिंचकर सच्चाई को सामने लाने में पुणतांबेकर सफल रहे हैं।

4.1.2.3 छात्र और अध्यापक के संबंध :-

शिक्षा व्यवस्था में फैलती अव्यस्था को भी पुणतांबेकर ने अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। 'रंग में भंग' एकांकी इसी विषय का उद्‌घाटन करता है। इस एकांकी में व्यंग्यकार ने छात्रों की बदलती मानसिकता तथा अध्यापकों के प्रति नष्ट होती आत्मीयता का अंकन किया है। पात्रों के संवादों से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के ऱ्हास होते तत्त्वों के दर्शन होते हैं। इसमें प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य के द्वारा पुणतांबेकर ने छात्र और अध्यापकों के बीच का संबंध किस तरह कमजोर पड़ता जा रहा है, यह दिखाने का प्रयास किया है। इत बात पर हालाँकि किसी ने गंभीरता से विचार नहीं किया था। पुणतांबेकर ने इस बात को नजर अंदाज नहीं किया। उन्होंने इस बात को भले ही गंभीरता से प्रस्तुत न किया हो, एक सहज रूप से ही बात को सामने रखा है लेकिन उसकी गंभीरता स्पष्ट हो गई है। इसमें अध्यापकों की तथा छात्रों की परीक्षार्थी वृत्ति पर छिपा व्यंग्य किया है। छात्रों को जिस प्रकार अध्यापकों के विषय में बातें करते हुए

दिखाया है तथा अध्यापकों का विद्यार्थियों को पढ़ाने का तरिका बताया है, उससे पुणतांबेकर की शिक्षा व्यवस्था के प्रति पैनी दृष्टि का प्रमाण मिलता है। इस एकांकी में पात्रों के संवादों से समय-समय पर इस विसंगति पर हास्य-व्यंग्य किया है जो विसंगति को उद्घाटित करता है। छात्रों के आवारा आदतों पर मेहता नामक पात्र द्वारा भरपूर व्यंग्य किया है। पुणतांबेकर ने मेहता नामक पात्र द्वारा छात्रों की इस गैरजिम्मेदाराना हरकतों पर बार-बार व्यंग्य किया है और साथ ही उन संवादों से हास्य की निर्मिति भी हुई है। मेहता कहता है - ''बीसवीं सदी के सभी मजनू ऐसी ही बातें करते हैं, लेकिन जब देखते हैं कि अपनी लैला दूसरे की बीबी बन गई है तो वे दूसरी लैला की खोज में निकल पड़ते हैं।''[1] छात्रों की इसी प्रकार की आदतों को पुणतांबेकर ने व्यंग्य का निशाना बनाया है। केवल छात्र ही नहीं तो अध्यापक भी उनके व्यंग्य बाणों से नहीं बच सके हैं। पुणतांबेकर अध्यापकों का केवल परीक्षा की दृष्टि से पढ़ाने का तरिका और अध्यापन में लापरवाही को व्यंग्य द्वारा स्पष्ट करने में सफल रहे हैं।

4.1.2.4 शिक्षा जगत की त्रासदी :-

पुणतांबेकर ने छात्रों और अध्यापकों के तक ही सीमित रहकर व्यंग्य लेखन नहीं किया है, उनका हास्य-व्यंग्य शिक्षा व्यवस्था की जड़ो तक पहुँचा है। उन्होंने 'रंग में भंग' एकांकी के बाद 'इन्टरव्यू की तैयारी' एकांकी में फिर से शिक्षा जगत पर प्रकाश डाला है। इसमें प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अज्ञान को स्पष्ट करता है। इस हास्य-व्यंग्य ने उनके ज्ञानी बने फिरने के ढोंग की पोल खोलकर रख दी है। प्रस्तुत एकांकी में सेठजी नामक पात्र एक कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष है। उनके और उनकी पत्नी सेठानी के द्वारा इन्टरव्यू लेने की तैयारी करते समय जो संवाद आए हैं, उनमें प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य से शिक्षा व्यवस्था में फैली अव्यवस्था और पैसों से प्राप्त होनेवाली सस्ती प्रतिष्ठा के दर्शन होते हैं। जिस प्रकार प्रस्तुत एकांकी में सेठजी अपने पैसों के बलबुते पर अनपढ़ हो कर भी कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष के पद पर आसीन हो चुके हैं; उसी तरह वर्तमान में सभी संस्थाओं, कमेटियों में भी यह स्थिति देखी जा सकती है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके गुणों से नहीं तो धन से बढ़ती नजर आ रही है। इस एकांकी में पुणतांबेकर ने झूठी बौद्धिकता और सस्ती प्रतिष्ठा को हास्य-व्यंग्य का विषय बनाया है। सेठजी और सेठानी के संवादों द्वारा शिक्षित युवकों की नौकरी की समस्या और अशिक्षित

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - रंग में भंग, पृष्ठ - 75

लोगों का उच्चपदस्थ होना, इस विसंगति पर हास्य-व्यंग्य किया है। सेठजी और सेठानी अपने अज्ञान के विषय में चर्चा करते हैं और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ज्ञान प्राप्त करने तथा कुछ न जानने से कोई फर्क नहीं पड़ता। ज्ञानी होकर भी लोग कहाँ कुछ पा सकते हैं। सेठजी और सेठानी का संवाद यहाँ उल्लेखनीय है -

"सेठानी - और जानने की जरुरत भी क्या है। न जानकर हमारा क्या नुकसान हुआ है ? बिल्डिगों, गुदामों और मोटरों में कमी थोड़े ही पड़ गई है ?

सेठजी - और जो जानते हैं वे 200 रुपये की नौकरी के लिए आज इन्टरव्यू देने आ रहे हैं। अच्छा, अब कुछ ही देर में दस बजने को है। खाना तो तैयार है न ? 11 को ठीक पन्द्रह मिनट पहले में कॉलेज दाखिल हो जाऊँगा।"[1]

उपर्युक्त व्यंग्य संवादों से शिक्षा व्यवस्था की विसंगति स्पष्ट हो गई है। जिसे शिक्षा की कोई गंध भी नहीं वह सेठजी, डिग्रियाँ प्राप्त किए हुए उम्मीद्वारों के इन्टरव्यू लेंगे यह बात व्यंग्य करने योग्य ही है और इस विसंगति को पुणतांबेकर हास्य-व्यंग्य के द्वारा प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

4.1.2.5 लोभ और शोषण की प्रवृत्ति :-

आज के युग में लोगों में स्वार्थ वृत्ति बढ़ती चली जा रही है, जिसके परिणाम स्वरूप लोभ और शोषण की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। व्यक्ति का लोभ उसे दूसरों का शोषण करने पर मजबूर कर देता है। यह स्वार्थ ही है जो मानव को दानव बना देता है। नेता, व्यापारी, उच्च पदस्थ व्यक्ति समाज को लूटने में लगे हुए हैं। नेता अपनी नेतागिरी की, व्यापारी अपने मिलावटवाले माल की तथा उच्च-पदस्थ व्यक्ति रिश्वत की दुकान समाज में खुले-आम जोरों-शोरों से चला रहा है। सभी लोग यह सब जानते हुए भी चूप है। नेता, व्यापारी, प्रतिष्ठित समझे जानेवाले लोग ही समाज का शोषण कर रहे हैं। 'चूहें' एकांकी में ऐसे शोषकों के प्रति तीव्र व्यंग्य प्रकट हुआ है। पुणतांबेकर ऐसे मुफ्तखोरों को चुहे की उपमा देते हैं। जिस प्रकार चूहें घर की चीजों को खुरेद-खुरेद कर खा जाते हैं; उसी प्रकार नेता आदि लोग समाज को खुरेदने का काम करते हैं। चूहों से बचने के उपाय पोपटलाल बताते हैं -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - इन्टरव्यू की तैयारी, पृष्ठ - 100-101

"पोपटलाल - दूसरा उपाय है बिल्ली। बिल्ली पाल लीजिए एक।

अनोखेलाल - अरे साहब, बिल्लियों का भी आजकल कोई भरोसा नहीं। कहते हैं किसी बड़े चूहे के सामने उसकी भी कुछ नहीं चलती।

पोपटलाल - तो बस एक ही उपाय बच जाता है और वह है जहर मिलाकर आटे की गोलियाँ रख दीजिए रात को इधर-उधर। खा लेंगे और मर जायेंगे अपने आप।"[1]

चूहों से बचने के इन तरिकों को आगे नेताओं की आदतों से जोड़कर पुणतांबेकर यह स्पष्ट करने में सफल रहे हैं कि सामान्यत: छोटे-छोटे भ्रष्टाचारी पुलिस की चपेट में आ जाते हैं, लेकिन बड़े-बड़े नेताओं के हाथ कानून से भी लंबे होते हैं। उन के आगे पुलिस भी कमजोर पड़ जाती है। हमारे देश की पुलिस ऐसे बड़े-बड़े भ्रष्टाचारी, शोषक, नेताओं को सजा देने में असमर्थ दिखाई देती हैं। इस व्यवस्था को पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से इस तरह प्रस्तुत किया है कि पाठक इस बात पर सोचने के लिए मजबूर हो जाता है।

4.1.3 पारिवारीक समस्याओं, उलझनों अभावों पर किए हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन :

इस एकांकी संग्रह की कूल एकांकियों में से चार-पाँच एकांकी ऐसे हैं जो पारिवारीक समस्याओं, उलझनों, अभावों आदि पर व्यंग्य करते हैं। इसमें 'अनोखेलाल चांदनी रात में', 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं', 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं', 'नहाने के बहाने', 'अनोखेलाल का विवाह दिन' आदि एकांकी उल्लेखनीय हैं। इन एकांकियों में हास्य की मात्रा अधिक नजर आती है। व्यंग्य का भी प्रयोग है लेकिन वह गंभीर समस्या पर न होकर रोजमर्रा के उलजलूल बातों को लेकर किया गया व्यंग्य है।

4.1.3.1 पति-पत्नी के बीच की अनबन :-

शंकर पुणतांबेकर के व्यंग्य-दृष्टि से पति-पत्नी के बीच की अनबन भी नहीं छूट सकी है। अनोखेलाल को लेकर लिखे गए सभी एकांकियों में अनोखेलाल तथा उसकी पत्नी लक्ष्मी के संवादों द्वारा इस बात पर प्रकाश डाला गया है। इन एकांकियों में व्यंग्यात्मकता कम तो हास्यात्मकता अधिक दिखाई देती है। किस तरह से पति-पत्नी छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ते रहते हैं, इस बात को पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य शैली में प्रस्तुत किया है -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - चूहें, पृष्ठ - 172

"लक्ष्मी - अच्छा तो मैं रेडियो हूँ।

अनोखे - रेडियो को तो बटन घुमाकर बन्द भी किया जा सकता है। तुम्हारा मुँह तो दिन-रात चलता ही रहता है।

लक्ष्मी - हाँ हाँ, मेरा मुँह तो दिन-रात चलता रहता है और तुम जैसे अपना मुँह बन्द ही किए रहते हो। मैं हवा से ही तो बातें करती रहती हूँ।"[1]

इस प्रकार से अन्य एकांकियों में भी जगह-जगह हास्य-व्यंग्य के प्रयोग दिखाई देते हैं।

4.1.3.2 आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न हास्य-व्यंग्य :-

पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाते समय व्यक्ति को आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक खर्चा बचाने के चक्कर में सामान्य व्यक्ति अपनी छोटी-छोटी ख्वाहिशों को भी पूरा नहीं कर पाता है। 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं' एकांकी में इसी बात को पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। पत्नी के साथ बाजार में साड़ी खरीदने के लिए न जाना पड़े और होनेवाले खर्चे को भी बचाया जा सके इसलिए अनोखेलाल बीमार पड़ने का जो नाटक करते हैं; वह हास्य निर्मिति कराने में सफल रहा है। अनोखे की बीमारी देख कर लक्ष्मी अनोखेद्वारा मना करने पर भी डॉक्टर को बुलाने चली जाती है तब अनोखे के संवादों से हास्य निर्मिति हुई है -

"लक्ष्मी - जरासे काढ़े से क्या होता है। डॉक्टर साहब का इलाज तो करना ही पड़ेगा। अच्छा, मैं जा रही हूँ। लौटती हूँ तब तक चुपचाप पड़े रहना।(जाती है)

अनोखे - लेकिन लक्ष्मी ...। नहीं मानी चली ही गई। बीमार नहीं हूँ, लेकिन अब जरुर बीमार हो जाऊँगा। ये घड़ी के काँटे भी कितने धीरे-धीरे सरक रहे हैं। लक्ष्मी को घर पर डॉक्टर साहब न मिलें तो अच्छा रहे। भगवान, डॉक्टर घर पर न हों। भगवान डॉक्टर घर पर न हों। भगवान डॉक्टर ... हाय भगवान, यह हॉर्न किसकी गाड़ी का है। कमबख्त, डॉक्टर जब जरुरी में चाहिए तब कभी समय पर नहीं मिलते और जब आवश्यकता न हो तो उधार बैठे मिल जाते हैं।"[2]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ - अनोखेलाल का विवाह दिन, पृष्ठ - 204
2. वही - अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं, पृष्ठ - 137-138

अनोखे बीमारी का नाटक करते-करते ऊब जाता है। वह छः बजे को इस नाटक को बंद करनेवाला था इसलिए बार-बार घड़ी में देखता है कि कब छः बजेंगे? इस प्रकार पुणतांबेकर ने सामान्य व्यक्ति के जीवन में आर्थिक अभाव के कारण निर्माण होनेवाली ऐसी अवस्था पर हास्यात्मक व्यंग्य किया है। पुणतांबेकर की सामान्य मनुष्यों के प्रति, उनकी समस्याओं के प्रति जागरूक दृष्टि यहाँ स्पष्ट हुई है।

4.1.3.3 प्रतिष्ठा के झूठे प्रदर्शन और आपसी ईर्ष्या भाव :-

मनुष्य में आपसी ईर्ष्या भाव तुरंत जागृत हो जाता है। पड़ोसवाले के पास कोई चीज़ है तो उस चीज का अपने भी घर में होना अनिवार्य सा लगने लगता है। इसके लिए मनुष्य कभी-कभी जो बात अपने बस में ना हो उसे पाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करता रहता है। 'अनोखेलाल ने नौकर रखा' एकांकी में पुणतांबेकर ने मनुष्य स्वभाव के इसी स्वभाव को व्यंग्य का निशाना बनाया है। प्रस्तुत एकांकी में लक्ष्मी अपनी आनेवाली सहेली पर अपना प्रभाव डालने के लिए घर को सजाती है। इसके लिए वह पड़ोसवाली के घर से फर्निचर आदि लाकर अपने घर में रखती है। यहाँ तक की नौकर रखने की आर्थिक स्थिति ना होकर भी नौकर रखती है। अनोखे को यह सब दिखावा पसंद नहीं। लक्ष्मी के इस व्यवहार से पुणतांबेकर सामान्य जीवन में प्रतिष्ठा के झूठे दर्शन और आपसी ईर्ष्या भाव को हास्य व्यंग्य का केंद्र बनाते हैं।

4.1.3.4 अनोखेलाल पात्र की मूर्खताओं द्वारा प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य :-

शंकर पुणतांबेकर ने चौदह एकांकियों में से नौ एकांकी को अनोखेलाल नामक पात्र को लेकर लिखे हैं। इन एकांकियों में व्यंग्यकार ने अनोखेलाल की विभिन्न मूर्खताओं, तथा उससे संबंधित, उसके पारिवारिक घटनाओं, पत्नी के साथ होनेवाली नोंक-झोंक, खाना बनाने की कोशिश में अनोखे की बनी हुई हालत और उससे उत्पन्न प्रसंग हास्य-व्यंग्य के कारण मनोरंजक बन गए हैं। अनोखेलाल की खाना बनाते समय जो फजीहत हुई है वह बहुत ही सूक्ष्मता से अंकित की है। अनोखेलाल पात्र को लेकर लिखे सभी एकांकी मनोरंजनात्मक ढ़ंग के हैं। यहाँ अनोखेलाल मध्यवर्गीय आदमी का प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रकार से पुणतांबेकर ने अपने हर एकांकी में हास्य-व्यंग्य का इस तरह प्रयोग किया है कि जिससे अपेक्षित उद्देश्य की पूर्ति हुई है। पारिवारीक समस्याएँ, उलझनें, अभाव आदि को भी हास्य-व्यंग्य शैली में प्रस्तुत करने से जीवन की कठिनाईयों का सामना हँसते-खेलते करने की पुणतांबेकर की वृत्ति स्पष्ट हो गई है। इस एकांकी संग्रह के एकांकियों में कुछ दोष भी दृष्टिगोचर हुए हैं। संवादों में अपेक्षित गतिमानता नहीं है, अभिनय संकेत तथा रंग संकेत भी अपेक्षा से कम है लेकिन जहाँ तक इन एकांकियों को मंचित करने का प्रश्न है, एक सफल निर्देशन के द्वारा इन दोषों से मुक्त रहकर एक प्रभावी एकांकी के रूप में इनका मंचन किया जा सकता है।

❑ निष्कर्ष -

विवेच्य एकांकियों का मूल्यांकन करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शंकर पुणतांबेकर अपने युग के प्रति सजग है। समाज में व्याप्त असंगति, विवशताओं से वे भली-भाँति परिचित हैं। राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र से जुड़ा हास्य-व्यंग्य समाज के भ्रष्टाचारी, पूँजीवादी लोगों को शोषक के रूप में तथा समाज को शोषित के रूप में प्रस्तुत करता है। इस पर किए गए हास्य-व्यंग्य ने इन नेताओं, व्यापारियों, भ्रष्टाचारियों की पोल खोलने का कार्य किया है। समाज में व्याप्त अनीति अमानवीय मूल्यों का पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से विरोध किया है। इस राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार और नेतागिरी के आडंबर को सब के सामने प्रस्तुत करने का कार्य उनके व्यंग्य एकांकी साहित्य ने किया है।

सामाजिक क्षेत्र से जूड़े एकांकियों का हास्य-व्यंग्य सामाजिक प्रश्नों से जुड़ा है। स्वास्थ्य विभाग की धाँधलियाँ, कमजोर कानून व्यवस्था, पुलिस की असमर्थता, शिक्षा जगत की त्रासदी आदि विभिन्न बातों को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से पुणतांबेकर ने प्रस्तुत किया है। इससे उनकी समाज के प्रति जागरूक दृष्टि का परिचय मिलता है। उन्होंने हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से सामाजिक विसंगति, विवशताओं को पाठकों के सम्मुख रखा है। पुणतांबेकर ने केवल राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक विषयों पर ही हास्य-व्यंग्य नहीं किया है तो पारिवारिक समस्याओं, विसंगतियों को भी अपने हास्य-व्यंग्य का विषय बनाया है। व्यक्ति

रोजमर्रा की जिंदगी में छोटी-मोटी बातों को लेकर आपसी झगड़े शुरू कर देता है, पुणतांबेकर उनकी इस आदत पर चोट करते हैं। एकांकियों में चित्रित 'अनोखेलाल' नामक पात्र एक मध्यवर्गीय मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी तमाम मूर्खताओं, अभावग्रस्त जीवन तथा उससे उत्पन्न समस्याएँ एक मध्यवर्गीय मनुष्य की समस्याएँ हैं। पुणतांबेकर के इन समस्त एकांकियों में व्यक्ति से लेकर शासन तक सभी की असमर्थता, कमजोरियाँ, विसंगति आदि बातों को उजागर करने में हास्य-व्यंग्य ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अभिनय संकेत, रंग संकेत अपेक्षा से कम होकर भी विवेच्य एकांकियाँ मंचन के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं।

❑❑❑❑